RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष : 74 अंक : 6
सृष्टि संवत् 1960853118
7 मई, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5063726

जालन्धर

वर्ष-74, अंक : 6, 4-7 मई 2017 तदनुसार 25 वैशाख सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आत्मा कहाँ है ? उसे कौन देखता है ?

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

क्व१स्य वीरः को अपश्यदिन्द्रं सुखरथमीयमानं हरिभ्याम्।
यो राया वज्री सुतसोममिच्छन्तदोको गन्ता पुरुहूत ऊती।।

-ऋ० ५।३०।१

शब्दार्थ-स्यः = वह **वीरः** = वीर **क्व** = कहाँ है ? **कः** = किसने **सुखरथम्** = सुखकारक शरीर वाले **हरिभ्याम्** = प्राण-अपान, अथवा ज्ञान-कर्मरूप दो घोड़ों से **ईयमानम्** = गति करने वाले **इन्द्रम्** = इन्द्र को, आत्मा को **अपश्यत्** = देखा है ? **यः** = जो आत्मा **वज्री** = वज्रसम्पन्न होकर तथा **पुरुहूतः** = अत्यन्त प्रशस्त होकर **सुतसोमम्** = बने-बनाये ऐश्वर्य को **इच्छन्** = चाहता हुआ **राया** = ऐश्वर्य से युक्त होकर **ऊती** = रक्षा और प्रीति के साथ **तत्** = उस **ओकः** = घर को **गन्ता** = जाने वाला है।

व्याख्या-मैं-मैं सभी करते हैं किन्तु 'मैं' को कितनों ने देखा है ? वेद का प्रश्न सीधा किन्तु तीखा है-'**क्व स्य वीरः**' = कहाँ है वह वीर? '**कः अपश्यदिन्द्रम्**'-इन्द्र को किसने देखा है ? सचमुच आत्म-दर्शन अतिदुर्लभ है। आत्मा के बाह्य स्वरूप की थोड़ी-सी झलक इस मन्त्र में दिखाई है। वह इन्द्र कैसा है-'**सुखरथमीयमानं हरिभ्याम्**' जिसे यह शरीर सुख के लिए मिला है और जो दो घोड़ों के साथ आता-जाता है। कदाचित् कठोपनिषत् में इन्हीं पदों की **व्याख्या** में ये वाक्य हैं-

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।३।।
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयाँस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।।४।।

तू आत्मा को रथी समझ और शरीर को रथ, बुद्धि को कोचवान जान और मन को लगाम मान। इन्द्रियों को घोड़ा कहते हैं और विषयों को उनका घास। आत्मा, इन्द्रिय तथा मन-इनके संघात को ज्ञानी लोग भोक्ता कहते हैं।

उपनिषद् के रथ और रथी से 'सुखरथ' अधिक स्पष्ट है। सुखरथ से शरीर का प्रयोजन भी स्पष्ट हो जाता है। आत्मा के शरीरधारण के प्रयोजन को अधिक स्पष्ट करके कहा है-'**सुतसोममिच्छन् तदोको गन्ता**' = निष्पादित ऐश्वर्य की चाहना करता हुआ उस घर को जाता है। अगला मन्त्र मानो इसका उत्तर है-

अवाचचक्षं पदमस्य सस्वरुग्रं निधातुरन्वायमिच्छन्।
अपृच्छमन्यां उत ते म आहुरिन्द्रं नरो बुबुधाना अशेम।।

-ऋ० ५।३०।२

मैने इस शरीरधारक के गुप्त तथा उग्र ठिकाने को बार-बार देखा है और उसकी चाहना करता हुआ उसके पास आया हूँ। [अपने ज्ञान के शोधन के विचार से] मैंने दूसरों से पूछा है, उन्होंने भी मुझे कहा है ''हम मनुष्यों ने निरन्तर ज्ञान से इन्द्र को-आत्मा को प्राप्त किया है।'' निरन्तर ज्ञानध्यान करने से आत्मा की प्राप्ति हो सकती है, अर्थात् विवेक का अभ्यास सदा होना चाहिए।

अविद्वान् सुने, जाने

प्र नु वयं सुते या ते कृतानीन्द्र ब्रवाम यानि नो जुजोषः।
वेददविद्वाञ्छृणवच्च विद्वान्वहतेऽयं मघवा सर्वसेनः।।

-ऋ० ५।३०।३

शब्दार्थ-हे **इन्द्र** = इन्द्र ! **सुते** = इस संसार के निमित्त **या** = जो **ते** = तेरे **कृतानि** = कृतकर्म हैं और **यानि** = जिनको तू **नः** = हमारे लिए **जुजोषः** = प्रीतिपूर्वक करता है, उन सबको **वयम्** = हम **नु** = तत्काल **प्रब्रवाम** = कहें, बखान करें। **वेदत्** = समझदार **च** = और **अविद्वान्** = विद्यारहित मनुष्य **शृणवत्** = सुने **अयम्** = यह **विद्वान्** = ज्ञानी **सर्वसेनः** = सब सेनाओं = साधनोंवाला **मघवा** = विद्याधन का धनी **वहते** = विद्या प्राप्त कराता है।

व्याख्या-आत्मा के कर्मों का सदा विवेचन करना चाहिए। किन-किन पूर्वकर्मों के फल से यह देह प्राप्त हुआ है, कौन-से ऐसे कर्म हो सकते हैं, जिनसे भावी कल्याण का सामान जुट सकता है ? विद्वान् मनुष्य के पास सब सामान, साधन होते हैं, अतः वह '**विद्वान् वहतेऽयं मघवा सर्वसेनः**' = सब साधनोंवाला महाधनी विद्या को प्राप्त कराता है। जिनके पास न हो, वह दूसरों को क्या देगा ? विद्वान् ही दूसरों को ज्ञान दे सकता है। अज्ञानी बेचारा क्या करे ? वेद का उसके लिए आदेश है-**वेददविद्वाञ्छृणवच्च**' = विद्यारहित मनुष्य जानने का यत्न करे और सुने। विद्या के दो उपाय इसमें बताते हैं-(१) जो अविद्वान् है, वह विद्वानों की क्रिया, चेष्टा आदि देखकर वैसा करे और धारे। (२) सुनना दूसरा उपाय है। बड़े-बड़े विद्यावान् विद्वान् जब आकर व्याख्यान दें, वह उनको सुने।

पढ़ना सुनने के अन्तर्गत-सा हो जाता है। गुरु बोलता है, शिष्य सुनता है, इसका नाम पढ़ना-पढ़ाना है। सुने बिना पढ़ना लगभग असम्भव है। वेद में दूसरे स्थान में कहा है-'**अक्षेत्रवित्क्षेत्रविदं ह्यप्राट्**' (ऋ० १०।३२।७) -अज्ञानी ज्ञानी से पूछता है। पूछना सुनने का मूल है। लगे हाथों विद्वान् का कर्त्तव्य भी बता दिया है-'**विद्वान् वहते**' विद्वान् विद्या परास कराता है, अर्थात् सच्चे विद्वान् के लिए यह स्वभाविक है कि वह अज्ञानियों को ज्ञान दे। ऋषि लिखते हैं-

''विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें'' (स० प्र० भूमिका), क्योंकि विद्वान् **सर्वसेनः**-सब साधनों वाला होता है।

इस मन्त्र में विद्वान् के साथ मघवा और सर्वसेन ये दो विशेषण यह संङ्केत करते प्रतीत होते हैं कि धनी और क्षत्रिय का भी विद्या-प्रचार कर्त्तव्य है, अथवा विद्वान् के लिए बलहीन और धनहीन होना कोई गौरव की बात नहीं है। विद्या के साथ शारीरिक बल तथा सम्पत्ति-बल भूषण है, दूषण नहीं। वेदधर्म के ह्रास के साथ लोगों में यह कुसंस्कार घर कर गया कि विद्वान् निर्बल और निर्धन होता है। आवश्यकता है कि संसार में, विशेषतः भारत में इस कुसंस्कार का खण्डन करके वैदिक तत्त्व प्रचार किया जाए।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

''यज्ञ की स्टीक व्याख्या जैसा मैंने समझा''

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

यज्ञ केवल अग्नि में घी, सामग्री, समीधा (लकड़ी) मन्त्रों सहित डालने का नाम ही नहीं है यह तो केवल प्रतीक मात्र है, बल्कि यज्ञ, वे संभी कार्य हैं जो परोपकार व जनहित की दृष्टि से किये जाते है (वे सभी यज्ञीय कार्य है) वे सभी यज्ञीय कर्म है जैसे यज्ञ के करने वाले का घर तो सुगन्धित व पवित्र होता ही है, साथ ही यज्ञ करने वाले का पड़ौसी चाहे वह उसका शत्रु ही क्यों न हो उसको भी लाभ पहुँचता है। इसीलिए वेदों में ''यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म'' कह कर यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया है। वेद के एक दूसरे मन्त्र में कहा गया है कि ''स्वर्ग कामोयजेत'' यानी स्वर्ग की कामना रखने वाले को यज्ञ करना चाहिए। अर्थात् यज्ञ करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है जो मानव का परम् लक्ष्य है।

यज्ञ शब्द यज् धातु से बना है जिसका अर्थ है देवपूजा, दान व संगति करण। यह तीनों चीजें एक यज्ञीय परिवार पर लागु होती हैं। परिवार में तीन किस्म के सदस्य होते हैं। (१) छोटे बच्चे (२) माता-पिता, वृद्धजन तथा बाहर से आए विद्वान् जन (३) युवा भाई-बहिन। देव पूजा के दो अर्थ हैं। पहला अर्थ परिवार सम्बन्धी है यानी छोटे बच्चे यज्ञ करने के पश्चात् खड़े होकर अपने माता-पिता, वृद्धजन व बाहर से आये विद्वानों को नसतमस्तक होकर श्रद्धापूर्वक पैर छूकर नमस्ते करके उनका आदर-सत्कार करना। पूजा का अर्थ किसी का आदर-सत्कार करना या किसी का सदुपयोग करना होता है, ना कि चन्दन रोली का टीका करके दीपक लेकर आरती उतारना होता है। पूजा के गलत अर्थ से केवल देश को ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति को बड़ी हानि उठानी पड़ी है। यहीं गलत पूजा अन्ध-विश्वास पाखण्ड को बढ़ाने में बड़ी सहायक सिद्ध हुई है। दूसरा अर्थ है पाँच जड़ (अचेतन) देवता, वे हैं अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और आकाश। इन पाँचों जड़ देवताओं का मुख अग्नि है। जिस प्रकार मुख से खाया हुआ अन्न, पेट में जाकर उसका रस व खून बनता है और फिर वह नस-नाड़ियों द्वारा पूरे शरीर में पहुँच घर शरीर को स्वस्थ्य बनाता है, उसी प्रकार हवन में डाला हुआ घी, सामग्री व समिधा, उनकी सुगन्धी हजार गुणा बढ़कर पूरे वायु मण्डल यानी-जल, पृथ्वी, हवा व आकाश में फैल जाती है और उनको युद्ध व पवित्र कर देती है। जिससे पूरा वायुमण्डल युद्ध व पवित्र हो जाता है और प्रत्येक जीव के लिए स्वास्थ्य वर्धक बन जाता है। इसीलिए हमारे ऋषि-मुनियों ने नित्य हवन (यज्ञ) करने का विधान बनाया है। यज्ञ करने का दूसरा कारण यह भी है कि प्रत्येक मनुष्य अपने मल-मूत्र, पसीना तथा अन्य तरीकों से वायु-मण्डल के कुछ भाग को गन्दा व अशुद्ध करता है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य बन जाता है कि उतना ही वह वायुमण्डल को शुद्ध व्यक्ति यज्ञ द्वारा करे। ताकि पूरा वायुमण्डल शुद्ध बना रहे।

परिवार में दूसरे किस्म के सदस्य हैं माता-पिता व वृद्ध जन, जिनके लिए दान शब्द का प्रयोग हुआ है। इसका तात्पर्य यह है कि छोटे बच्चे जब हवन के बाद अपने माता-पिता तथा वृद्ध जनों का पैर छूकर सादर नमस्ते करके उनका आदर-सत्कार करते है, तब उनका भी कर्त्तव्य हो जाता है कि वे बच्चों को आशीर्वाद देवे तथा अपने अनुभवो का ज्ञान देवें। इनको दान की संज्ञा दी है। दान वह होता है जो नि: स्वार्थ भाव से, बिना कुछ लेने की आशा से दिया जाता है। इसलिए वृद्धजनों के आशीर्वाद को दान की संज्ञा दी है। इसका एक दूसरा भी रूप है कि किसी जरूरतमन्द को दान देना। यज्ञ एक परोपकारी कार्य है इसलिए वृद्धों को यज्ञ से दान देने की वृत्ति का भी विकास करना चाहिए।

यज्ञ का तीसरा अर्थ है संगति करण। संगतिकरण में भी दो अर्थ हैं। पहला अर्थ है कि परस्पर भाई-बहिन एक दूसरे से प्यार करें, साथ ही बड़ों का आदर-सत्कार व छोटों से स्नेह व प्यार करें ताकि परिवार का वातावरण भेद-भाव, वैमनस्य रहित व प्यार भरा बना रहे तथा परिवार में सुख व शान्ति बनी रहे। इसका दूसरा अर्थ यह है कि यज्ञ में हर चीज का संगति-करण बना रहे, यानी सामग्री में जड़ी-बूटियों की मात्रा उचित हो, घी व सामग्री सही मात्रा में जैसा विधान है वैसे ही डाली जावे तथा उठने-बैठने में भी संगतिकरण हो ताकि यज्ञ सुचारू रूप से चलता रहे, और सभी हवन का पूरा लाभ उठा सके।

यहाँ यह बात भी बतलाना अति आवश्यक है कि यज्ञ को वेदों में ''अयं यज्ञ विश्वस्य भुवनस्य नाभि:'' यानी यज्ञ को सम्पूर्ण विश्व की नाभि (केन्द्र) बताया गया है। जैसे पूरा शरीर नाभि से नियन्त्रित होता है, वैसे ही पूरा विश्व, यज्ञ से नियन्त्रित रहता है। इसीलिए यज्ञ की बड़ी महिमा है। यज्ञ हर व्यक्ति को नित्य करना चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ न कर सके तो कम से कम हर परिवार को तो नित्य ध्वन करना ही चाहिए ताकि परिवार का वातावरण युद्ध व पवित्र बना रहे तथा परस्पर के व्यवहार में प्रेम बना रहें।

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मुझे पितृकुल तथा ससुर कुल दोनों ही बड़े पक्के आर्य समाजी परिवार मिले। मेरे स्व. पिता गोविन्द राम आर्य, जिनको लोग श्रद्धा से ''प्रधान जी'' के नाम से सम्बोधित करते थे। वे एक दृढ़ आर्य समाजी व पक्के ऋषि-भक्त थे। उन्होंने अपने ८१ वर्षीय जीवन में अनेकों परोपकारी व समाज सुधार के काम किये, जिनमें आर्य कन्या पाठशाला का बीस वर्षों तक एक बड़ी अच्छी अध्यापिका लाकर बड़े अच्छे ढंग से चलाना, बच्चों को दसवीं तक पढ़ाने के लिए धन एकत्रित करके एक अच्छी बिल्डिंग बना कर सरकार को देना, गाँव में पोस्ट ऑफिस खुलवाना, अकाल के समय गरीबों की मदद करना व सैकड़ों गऊओं को मृत्यु से बचाना, ढोंग, आडम्बरों व पाखण्डों का डटकर विरोध करना, गो व हिन्दी रक्षा के आन्दोलनों में शामिल होकर जेल की यातनाएँ सहना तथा जो सबसे बड़ा उन्होंने काम किया वह है ८१ बाल विधवाओं को योग्य पतियों के साथ पुनर्विवाह करवाकर उनका जीवन सुखी बनाना ही नहीं, साथ ही तीन बाल विधवाओं का अपने एक सुपुत्र व दो सुपौत्रों से विवाह करके अपने घर की बहु बनाकर अग्रवाल समाज में एक उदाहरण पेश करना मुख्य था। वे नित्य संन्ध्या व साप्ताहिक पारिवारिक यज्ञ भी करते थे। मेरी धर्म पत्नी विमला देवी के दादा जी, जिनका नाम भालाराम जी था और सभी लोग उन्हें आदर व सम्मान से ''मन्त्री जी'' कहते थे। वे नित्य दोनों समय संन्ध्या व हवन करके ही भोजन करते थे। यात्रा में भी यज्ञ का पूरा सामान एक झोले में रखते थे और दोनों समय संन्ध्या, हवन करके ही भोजन करते थे। वे सन् 1939 में हैदराबाद सत्याग्रह और 1957 में हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी भाग लेकर जेल की यातनाएँ झेली थी। वे पक्के ऋषि-भक्त व सच्चे आर्य समाजी थे। उनका जीवन भी पूर्ण संयमी था।

हरियाणा के भजनोपदेशक अपने भजनों में उनका सच्चे आर्य के रूप में उदाहरण पेश करते थे। ऐसे आर्य समाजियों से हमें शिक्षा लेनी चाहिए।

सम्पादकीय......

युवा पीढ़ी को नैतिक मूल्यों से जोड़ने एवं चरित्रवान बनाने लिए युवा निर्माण शिविरों का आयोजन करें

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से विशेष निवेदन है कि युवाओं के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए एवं उनके अन्दर नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए आने वाली गर्मियों की छुट्टियों में अपनी-अपनी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं में चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन करें। युवा पीढ़ी ही राष्ट्र एवं समाज का भविष्य है। सामाजिक उन्नति के लिए युवाओं का चरित्रवान एवं राष्ट्रभक्त होना आवश्यक है। जिस राष्ट्र की युवा पीढ़ी चरित्रवान एवं राष्ट्रभक्त होती है वह राष्ट्र सदैव उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। चरित्र के विकास के लिए इच्छा शक्ति का होना बहुत आवश्यक है। जिसमें इच्छा शक्ति का अभाव होता है, वह व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता। जो अपने संकल्पों पर दृढ़ नहीं रह सकता, जिसका अपना कोई स्थाई सिद्धान्त नहीं होता, जो अपनी बुद्धि का सदुपयोग नहीं करता, उस व्यक्ति में इच्छा शक्ति का अभाव होता है। ऐसे मनुष्य किसी भी बड़े कार्य को करने में अक्षम होते हैं। ऐसे व्यक्ति किसी का भला नहीं कर सकते। ऐसे व्यक्तियों से अपना भला नहीं होता तो वे समाज का क्या भला कर सकते हैं। एक चरित्रवान व्यक्ति के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति का होना आवश्यक है। बालकों को अपना निर्माण करने का अवसर देना चाहिए। जो लोग उन्हें अपना आत्मनिर्माण करने का मौका नहीं देते, कठिनाईयों को सहन करने का अवसर नहीं देते, ऐसे लोग उनके चरित्र विकास तथा उन्नति में सबसे बड़े बाधक बनते हैं।

राष्ट्र की उन्नति के लिए नैतिक मूल्यों से युक्त चरित्रवान युवा पीढ़ी का होना अति आवश्यक है। युवा पीढ़ी किसी भी राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति होती है। जो इस युवा पीढ़ी को बर्बाद कर देता है, नशे की दलदल में ढकेल देता है, वह राष्ट्र कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। वर्तमान समय में युवा पीढी को नशे से बचाने की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज की युवा पीढ़ी को उसके कर्त्तव्य का बोध कराने वाला कोई नहीं है। स्कूल में भी इस प्रकार की शिक्षा नहीं मिल रही है जिससे विद्यार्थी के अन्दर अच्छे गुण विकसित हो, उसके अन्दर नैतिक मूल्यों की वृद्धि हो। आज की युवा पीढी को चरित्रवान बनाने के लिए माता-पिता और अध्यापकों को अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। किसी भी बालक के जीवन निर्माण में उसके माता-पिता और अध्यापकों की प्रमुख भूमिका रहती है। जो इस भूमिका को निभाते हैं, अपने कर्त्तव्य का वहन करते हैं, वे राष्ट्र की उन्नति और तरक्की में अपना योगदान देते हैं। इसलिए माता पिता और अध्यापकों का कर्त्तव्य है कि वे अपने-अपने कर्त्तव्यों को निभाते हुए बालक और बालिकाओं में ऐसी इच्छा शक्ति उत्पन्न करें, ऐसा आत्मविश्वास जागृत करें जिससे वे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने पथ से विचलित न हो सके। आत्मविश्वास से युक्त बालक असम्भव से असम्भव कार्य को करने की क्षमता रखता है।

जीवन में कई अवसर आते हैं जब हमारे सामने निर्णय लेना कठिन हो जाता है। अनिश्चय की स्थिति में मनुष्य की समझ में कुछ नहीं आता। मनुष्य सोचता है, विचारता है, सभी प्रकार की युक्तियों का सहारा लेता है और तब अन्तर्द्वन्द के पश्चात किसी एक निर्णय पर पहुंचता है। यह निर्णय हमारी इच्छा शक्ति करती है। युद्ध के लिए तैयार अर्जुन के सामने एक समय ऐसा ही संकट उत्पन्न हुआ था। उसके सम्मुख प्रश्न था कि वह धर्म युद्ध करके अपने आत्मीय जनों की हत्या करे या आत्मीयता के मोह में पड़कर अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाए। सोचा समझा, योगेश्वर श्री कृष्ण के उपदेश को सुना और अन्त में निश्चय किया कि मैं युद्ध में भाग लेकर अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करूंगा।

अच्छे चरित्र के निर्माण के लिए इच्छा शक्ति का होना अति आवश्यक है। जो व्यक्ति दृढ़ निश्चय नहीं कर पाता, जो अपने किसी कार्य को तन्मयता के साथ नहीं करता, उसका व्यक्तित्व प्रभावहीन होता है तथा चरित्र दुर्बल होता है। दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा मनुष्य अपने जीवन में परिवर्तन ला सकता है। जिस व्यक्ति को नशे का सेवन करने या किसी प्रकार के दुर्व्यसन की आदत पड़ गई हैं, ऐसे मनुष्य भी दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा इस आदत से छुटकारा पा सकते हैं। मनुष्य अगर अपनी इच्छा शक्ति को दृढ़ बना ले और संकल्प धारण कर ले तो असम्भव कार्य को भी सम्भव बना लेता है। नीतिकारों का कहना है कि मनुष्य के सभी कार्य दृढ़ इच्छा शक्ति और पुरूषार्थ से ही सम्पन्न होते हैं। जो व्यक्ति किसी लक्ष्य को लेकर संकल्प करते हैं और उसे पूरा करने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देते हैं ऐसे मनुष्य ही राष्ट्र की उन्नति में सहायक होते हैं और राष्ट्र का गौरव बनते हैं। आने वाली पीढ़ियां ऐसे लोगों को अपना आदर्श बनाती हैं और उनके मार्ग का अनुसरण करती हैं। वही राष्ट्र उन्नति कर सकता है जिस राष्ट्र के लोग दृढ़ इच्छा शक्ति से युक्त तथा चरित्रवान होते हैं। ऐसे लोगों के द्वारा राष्ट्र का गौरव बढ़ता है।

आज हमारे देश के नवयुवक इन्जीनियरिंग, विज्ञान, कृषि आदि सभी क्षेत्रों में उन्नति कर रहे हैं परन्तु दुर्भाग्यवश भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और बेईमानी बढ़ रही है। इसका एकमात्र कारण यह है कि नवयुवकों के चरित्र निर्माण की ओर किसी का ध्यान नहीं है। कभी हमारा देश जिस चरित्र की महानता के लिए विश्व में प्रसिद्ध था आज उसी देश के चारीत्रिक मूल्यों का दिन-प्रतिदिन पतन हो रहा है। चारीत्रिक मूल्यों का पतन होने के कारण ही हमारा सांस्कृतिक पतन हो रहा है, हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। चरित्र के नष्ट हो जाने से सब कुछ नष्ट हो जाता है।

आज देश के गिरते हुए नैतिक स्तर को उठाने के लिए बालकों का चरित्रवान बनना परमावश्यक है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजें एवं शिक्षण संस्थाएं इस कार्य की ओर विशेष ध्यान दें। युवा पीढ़ी के अन्दर नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए एवं चरित्रवान बनाने के लिए ग्रीष्मकालीन अवकाश में अपने-अपने जिलों में वैदिक चेतना शिविर, आर्य वीर दल शिविर, युवा चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन करें। युवाओं को अपनी मुख्य वैदिक विचारधारा से जोड़ने के लिए सभी आर्य समाजें एवं शिक्षण संस्थाएं विशेष ध्यान दें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इस कार्य के लिए आपको हर प्रकार से सहायता देगी। सभा में बाल सत्यार्थ प्रकाश और अन्य वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराने वाला साहित्य हमेशा उपलब्ध है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के छठे नियम में निर्देश दिया है कि उन्नति तीन प्रकार की होती है-शारीरिक उन्नति, आत्मिक उन्नति एवं सामाजिक उन्नति। आज की युवा पीढ़ी की शारीरिक उन्नति के लिए उन्हें नशे जैसी बुराईयों से दूर करना है, आत्मिक उन्नति के लिए वैदिक सिद्धान्तों से युक्त शिक्षा देने की जरूरत है। जब युवा शारीरिक एवं आत्मिक रूप से उन्नत होगा तो सामाजिक उन्नति स्वयं ही हो जाएगी।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

साहस सेवा समर्पण के साकार रूप

-ले० आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार फलैट नं. सी-1, पूर्ति अपार्टमेंट विकासपुरी, नई दिल्ली

सुरभित-फल-पुष्पः प्रीठाय-न्द्यलोकं

विलसति विटपी यद् रोपितो ज्ञान रुपः।

जगति यदभिधानं त्याग पर्याय भूतम्

जयतु स यतिवर्यो हंसराजो महात्मा।।

ज्ञान-सौरभ से पूरित अध्येता रूपी फल-फूलों से विश्व को प्रसन्न करने वाला विद्या रूपी वृक्ष (डी. ए. वी.) जिन्होंने रोपा, संसार में जिनका नाम त्याग का पर्याय है उन· यतिवर्य महात्मा हंसराज की जय हो।

धन्य है वे लोग जो भारत भूमि के किसी भाग में उत्पन्न हुए। यह भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है, क्योंकि यहां स्वर्ग के अतिरिक्त मोक्ष की साधना भी की जा सकती है। स्वर्ग में देवत्व भोग लेने के बाद देवता मोक्ष की साधना के लिए कर्मभूमि भारत में फिर जन्म लेते हैं।

ऐसे ही पुण्यभूमि में पंजाब के प्रसिद्ध नगर होशियारपुर से तीन मील दूर कस्बा बजवाड़ा में 19 अप्रैल 1864 को महात्मा हंसराज का जन्म हुआ। वे बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। स्वामी दयानन्द जी से दिव्य प्रेरणा पा करके सामाजिक कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लेने लगे। जीवन भर गरीबों, दुःखियों, विधवाओं, अनाथों की सेवा में लगे रहे।

डी. ए. वी. जो एक विशाल वट वृक्ष बन चुका है जिसकी कीर्ति देश विदेश में फैली हुई है, उस सबका श्रेय त्याग तपस्या के साक्षात् मूर्ति महात्मा हंसराज जी को है। महात्मा हंसराज जी परगुण प्रकाशन के सूर्यमुखी परादर के हरसिंगार, विनम्रता की बेला, कृतज्ञता की मालती, शालीनता की चम्पा एवं देदीप्यमान सूर्य की तरह थे।

वह ऐसे कमल है जो स्वगुण श्रवण की शक्ति में संकुचित हो जाते हैं तो परगुण कथन के दिवस में विस्तृत है।

एक बार की बात है कि किसी ने हंसराज जी को कहा कि अमुक आदमी ने पाप से खूब पैसा कमाया है। इस पर महात्मा जी कहने लगे- मैं उनके जीवन के विषय में कुछ नहीं जानता, परन्तु इतना तो अवश्य पता है कि उस व्यक्ति ने कालिज के लिए 2500 रुपया दान दिया है। किसी व्यक्ति के क्रोध पर जब बात चली तब महात्मा हंसराज जी कहने लगे कि वह व्यक्ति बहुत उत्साही है, कठिनाई को कठिनाई नहीं समझता। क्योंकि कठिनाई को कठिनाई समझना ही बहुत बड़ी कठिनाई है। वे किसी की कभी भी निन्दा नहीं करते थे, अपितु दूसरों के गुणों की प्रशंसा करने में थकते नहीं थे। वह एक सच्चे सन्त पुरुष थे।

परगुण परमाणून् पर्वती कृत्य नित्यम्।

निज द्वदि विकसन्तः सन्तिः सन्तः क्रियन्तः।।

महात्मा हँसराज सादे कपड़े में एक सच्चे संन्यासी थे। एक दिन वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के समीप आर्यसमाज के कुछ संन्यासी पहुँचे और निवेदन करने लगे कि हम महात्मा हँसराज जी से कहना चाहते हैं कि वे संन्यासी की दीक्षा लें। कृपया आप हमारे अगुवा बनकर महात्मा जी के पास चलें। इस पर स्वामी सर्वदानन्द जी ने बड़े गंभीर होकर कहा-महात्मा हँसराज तो हमसे भी बड़ा संन्यासी है। सफेद कपड़ा पहनता है तो क्या हुआ ? हम तो कपड़े से संन्यासी है, वह मन से संन्यासी है। भला में उनसे संन्यास लेने को कैसे कहूँ ? स्वामी जी की इस बात को सुनकर अन्य संन्यासियों ने अपना विचार छोड़ दिया और वे वापिस लौट गये। महात्मा हँसराज जी महान ईश्वर भक्त थे, वे गायत्री का जाप एवं दोनों काल संध्या करते थे, यही कारण है कि वे पहाड़ जैसे दुःखों का सामना कर पाये। महात्मा हँसराज जी की पत्नी का देहावसान हो गया, पुत्र बलराज कारावास में था। उनके भाई को आर्थिक संकट ने आ दबोचा। ऐसी विषम परिस्थिति में महात्मा जी धैर्यपूर्वक आर्यसमाज की सेवा में संलग्न थे।

हरति कलुषमस्मच्चेतसो सच्च-रित्रम्

भवति भुवन मध्या यस्य कीर्त्या पवित्रम्।

पर-हित रत-चित्तो यो हि धर्मैक वित्तो

जयतु स यति वृत्तो हँसराजो महात्मा

जिनका पावन चरित्र हमारे हृदय की कालिमा को दूर करता है, जिनकी कीर्ति से संसार पवित्र होता है, जिनका चित्त सदा परोपकार में रत था, धर्म ही जिनका धन था वे यति तुल्य आचरण वाले महात्मा हँसराज जयी हों।

महात्मा हँसराज जी कथन है- ईर्ष्या तथा द्वेष की प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं होती। अपने मन की शुद्धि, ज्ञान की प्राप्ति तथा शुभकामनाओं के लिए परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए। प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने नगर, कस्बा, ग्राम तथा कुल में एक बढ़िया उदाहरण बंने और वेदों के प्रकाश को सामने रखे जो सहस्त्रों वर्षों के पश्चात् स्वामी दयानन्द ने पुनः प्रसारित किया है।

यदि हमारे कर्म ऊँचे होंगे तो हम मुक्ति पायेंगे, अन्यथा नहीं। आर्य समाज की सदस्यता हमें मुक्ति नहीं दिलाएगी। मुक्ति तो हमारे शुभ कर्मों तथा पवित्र आचरण पर निर्भर है। कर्म भी एक यज्ञ है।

जिस प्रकार मणियों का मूल्य पृथक रहने पर कम होता है, माला के रूप में उनका मूल्य बढ़ जाता है, इसी प्रकार जाति जब एक होती है तो उसका विशेष आदर व महत्व होता है, परन्तु उसी जाति के पृथक-पृथक टुकड़े वह सम्मान तथा मूल्य नहीं पा सकते।

ऐसे महान चिन्तक, ईश्वर भक्त, त्यागी, तपस्वी, कर्मयोगी समाज सुधारक, ऋषिभक्त, डी. ए. वी. के सर्जक, अनेक संस्थाओं के प्राण, महान शिक्षाविद् अनेक शिष्यों के जीवन निर्माता, निष्काम सेवा के मूर्ति, परोपकारी महात्मा हँसराज जी को सादर प्रणाम।

जीवन उन्हीं का धन्य है, जीते हैं जो सबके लिये।

धिक्कार है उनके लिए, जीते हैं जो अपने लिये

जन्म होता है सृजन का विश्व के उद्धार को

विश्व सेवा, विश्व मंगल, विश्व को उपकार को

आर्य समाज आर्यनगर का वार्षिक उत्सव 8 मई से

आर्य समाज वेद मंदिर आर्य नगर जालन्धर का 39वां वार्षिक महोत्सव 8 मई से 14 मई 2017 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। 8 मई से 13 मई 2017 तक प्रतिदिन सायं 7.00 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक पारिवारिक वेदकथा आचार्य महावीर जी मुमुक्ष और भजनोपदेशक पंडित संदीप आर्य जी द्वारा होगा। 14 मई 2017 से रविवार को विशेष कार्यक्रम सुबह 8.00 बजे से 9.30 बजे तक विश्व शान्ति महायज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा आचार्य महावीर जी मुमुक्षु और मुख्य यजमान श्री निर्मल आर्य जी मंत्री आर्य समाज बस्ती बाबा खेल जालन्धर होंगे। 9.45 बजे ध्वजारोहण श्री राज कुमार जी एवं श्री ओम प्रकाश मोखा द्वारा किया जायेगा। आर्य महासम्मेलन 11.00 बजे से 2.00 बजे तक होगा जिसकी अध्यक्षता श्री सरदारी लाल जी आर्य करेंगे। मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री के.डी भंडारी जी पूर्व विधायक, श्री रवि महेन्द्रु जी पार्षद वार्ड नम्बर 38, श्री प्रेम भारद्वाज जी महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार सभा, और कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी होंगे। धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वह पधार कर धर्म लाभ उठावें।

-वेद आर्य, महामंत्री

यज्ञ कर्ता की परमात्मा रक्षा करते हैं

-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद उ. प्र.

मानवीय शरीर का संचालन प्राण शक्ति से होता है। प्राण नहीं तो यह मानव शरीर कुछ भी कार्य नहीं करता। इसे मृत माना जाता है अर्थात् इस शरीर में से आत्मा अलग हो चुकी है। अब इस शरीर का अस्तित्व पुराने वस्त्र के समान होता है, जिसे कोई भी व्यक्ति अपने पास नहीं रखना चाहता। इस कारण इस शरीर से सम्बन्ध रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसे जल्द से जल्द घर से निकाल कर शमशान ले जाने की इच्छा रखता है जहां अंतिम संस्कार के रूप में इस शरीर को जला दिया जाता है। प्राणशक्ति के बिना शरीर का अस्तित्व ही नहीं। इस कारण ही प्राणायाम द्वारा शरीर को तपाने की प्राचीन परंपरा रही है। प्राणायाम से जो प्राण साधना की जाती है, इससे मानव जितेन्द्रिय बनता है। जो जितेन्द्रिय हो जाता है उसका जीवन यज्ञमय हो जाता है। सामवेद का 16वां मन्त्र भी इस तथ्य को ही स्पष्ट करता है।

प्रति त्यं चारुमध्वरम गोपीथाय प्रहूयसे।

मरुद्भिरग्न आगहि।। सामवेद 16।।

(1) यज्ञ ही जीवन का प्रथम व आवश्यक कर्म हो :

हे अग्ने ! आप को हम उस चारणीय तथा करने योग्य हिंसा रहित यज्ञ में हमारी इन्द्रयों की रक्षा करने के लिए पुकारते है। यह मनुष्य का पुनीत कर्त्तव्य है कि वह अपनी प्रत्येक इन्द्रिय से उत्तम व पुनीत यज्ञ आदि कर्म करे। मनुष्य की दिनचर्या में यज्ञ का मुख्य स्थान रहे। यज्ञ के बिना वह कुछ भी ग्रहण न करे। यज्ञ ही जीवन का आवश्यक कर्म हो। यही मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है। इस सब तथ्य को इस मन्त्र में चारु शब्द के अन्तर्गत लिया गया है।

(2) हमारा कोई भी कार्य हिंसक प्रवृति का न हो:

हमारे लिए प्रतिदिन यज्ञ को जीवन का दैनिक व्यवस्था का प्रथम कर्तव्य निर्धारित किया है। हमारी प्रत्येक गतिविधि की, प्रत्येक कार्य की सदा यह प्रवृति है कि हम अपने कार्य अहिंसक रूप में करें। हिंसा को पास न आने दें। मन्त्र भी अध्वर के माध्यम से कहता है कि हिंसा नहीं करें। वेद तो सबका भला चाहता है, जो हिंसा से नहीं हो सकता। इसलिए सब का भला करने के लिए हमें ऐसे ढंग अपनाने होते हैं जिससे सब प्राणियों का भला हो। यह हमारे कार्य के श्रेष्ठता तथा यही यज्ञ रूपता की कसौटी है।

(3) प्रभु स्मरण से आसुरी प्रवृत्तियां दूर होती है :

मन्त्र तो सब का भला करने, सब पर दया करने की प्रेरणा देता है किन्तु मानव प्रवृति इसके सदा ही उलट बनी रहती है। इस कारण ही हमारी इन्द्रियों पर सदा आसुरी प्रवृत्तियों का आक्रमण होता रहता है अर्थात् हमारी प्रवृत्तियां आसुरी प्रवृत्ति से ग्रसित रहती हैं। आसुरी कार्यों का हमारी इन्द्रियों पर शीघ्र ही प्रभाव हो जाता है। यही कारण है कि हमारी इन्द्रियां निर्माणात्मक कार्यों को छोड़ कर विनाशात्मक, ध्वंसात्मक कार्यों की ओर लग जाती है।

(4) प्राणों की साधना आवश्यक:

जब हमारी इन्द्रियां आसुरी प्रवृत्तियों की ओर बढ़ती हैं तो हम स्वयम को यज्ञ आदि शुभ कर्मों में प्रवृत कर अपनी इन्द्रियों की रक्षा के लिए परमपिता परमात्मा को पुकारते हैं, उसका स्मरण करते हैं। प्रभु का स्मरण ही आसुरी प्रवृत्तियों को दूर करने का एक मात्र उपाय है।

मन्त्र कहता है कि हे प्रभो ! प्राणों के साथ आईये। अर्थात् प्राण वायु जो हैं वह हमें प्राप्त हो। हम प्राणायाम के माध्यम से इस वायु को प्राप्त करें। इस प्रकार आप हमें प्राप्त हों। इस सबसे जो तथ्य उभर कर सामने आता है, वह है कि हमारी इन्द्रियों की रक्षा के लिए प्राणों की साधना अर्थात प्राणायाम आवश्यक होता है। इसके बिना इन्द्रियों की साधना संपन्न ही नहीं हो सकती।

(5) इन्द्रियों की साधना व यज्ञ न नष्ट होने दें :

उपनिषदों का भी यह कथन है कि जब असुरों ने सब इन्द्रियों पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया परन्तु जब उन्होंने प्राणों पर उन्हें ध्वस्त करने के लिए आक्रमण किया तो वह इस प्रकार धुलिधुसरित हो गए जिस प्रकार कि कठोर पत्थरों से टकराकर मिट्टी के ढेले बिखर कर गिर जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि इन्द्रियों की साधना हमें पत्थर के सामान कठोर बना देती है। इसलिए हम प्राणायाम के माध्यम से इन्द्रियों की साधना तथा यज्ञ को कभी नष्ट न होने दें।

(6) श्रेयमार्ग स्थायी सुख का साधन :

भोगवाद से कुछ समय के लिए लाभ अथवा सुख अवश्य मिलता है किन्तु यह क्षणिक सुख अनुपासेय होता है। इस का स्थायी लाभ नहीं होता। यह कुछ अथवा अल्प समय के लिए तो मैत्री स्थापित करता है किन्तु स्थायी मैत्री इससे नहीं मिलती। स्थायी लाभ के लिए स्थायी सुख के लिए तो श्रेय मार्ग अपनाना ही आवश्यक होता है। सुख के इस श्रेष्ठ मार्ग पर सब का चल पाना संभव नहीं होता। कुछ विरले लोग ही, जो धीर होते हैं, धैर्य वाले होते हैं, वही ही इस मार्ग को अपना पाते हैं। हम भी इन थोड़े से लोगों में से एक बने तथा श्रेयस मार्ग पर चल कर विश्व कल्याण के लिए यज्ञ मय मार्ग अपनावें।

वेद और मानव

ले. सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। धर्मों का आदि स्रोत वेद है। वेद मानव-जीवन के लिए उपयोगी विविध ज्ञान-विज्ञान की अमूल्य निधि हैं। इनमें ब्रह्मविद्या, आत्म विद्या, भूत विद्या क्षत्रविद्या, नक्षत्रविद्या, कृषिविद्या, वाणिज्य विद्या, भैषज्य विद्या राज विद्या आदि विभिन्न विद्याओं के स्वच्छ स्रोत प्रस्फुरित हो रहे है। विशेष कर भक्तिरस को तो ऐंसी तरांगिणी प्रवाहित हुई है कि उसमें स्नान कर स्तोता का हृदय नितान्त निर्मल, शान्त और रस विभोर हो उठता है। जब वेद की बात हो रही हो और दयानन्द का नाम न आए तो ऐसा कभी हो नहीं सकता। क्योंकि दयानन्द यदि देह है तो वेद उसका आत्मा है। ऐसा इसलिए है कि दयानन्द से पूर्व वेदों की यह स्थिति नहीं थी जो आज है। दयानन्द के हाथ सर्वप्रथम वेद लगे। वेद क्या हाथ लगे मानो सच और झूठ की कसौटी हाथ लग गई। दयानन्द ने उद्घोष दिया कि-वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। ऋषि दयानन्द ने ऐसा इसलिए कहा-क्योंकि वेद किसी जाति विशेष के लिए नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के के लिए है। मानव यीनी सभी योनियों में उत्तम हूँ। इसलिए मनुष्य को 'मनुर्भव' का उपदेश दिया। क्योंकि हे मानव ! तू मानव बन। मानव वहीं जो मननशील है चिन्तनशील है बुद्धि व विवेक के द्वारा कर्म करता है। मानव जन्म कर्म करने के लिए है। इसलिए मानव-शरीर भोग-योनि भी है और कर्म योनि भी है, उस योनि में आकर आत्मा पूर्व जन्म तथा इस जन्म में कृत कर्मों का भोग तो करता ही है, साथ ही परमात्मा ने उसे यह सर्वोत्कृष्ट शरीर इस निमित्त भी दिया है कि वह अन्य नवीन कर्मों को भी करें। कर्म करने में यद्यपि जीवात्मा कर्तव्य कर्म-नित्य, नैमित्तिक, प्रायाश्चित तथा उपासना। स्वतन्त्र है, तथापि वेद का उपदेश है कि परमेश्वर से प्रेरणा लेता हुआ वह कर्तव्य कर्म ही करें तथा निषिद्ध कर्मों से बचे। ऋषि ने जो उद्घोष दिया कि-वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, इसके अनुसार एवं संसार के मननशील प्राणियों ! जो इस पर खरा उतरे, उसे ले लो शेष सब त्याग दो। व्यर्थ के झगड़ों में न पड़ो। जिन्होंने इस वेदरूपी ज्ञानी को सुना, पढ़ा, समझा, जाना और जीवन रूपी व्यवहार में प्रयोग लिया। वे इस संसाररूपी को पार कर गए। जिन्होंने संसार नहीं किया वे यहीं के फंसे रह गए।

वेद एवं पर्यावरण

-ले० शिव नारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दातावाड़ी,कोटा (राज.)

(गतांक से आगे)

जलीय प्राणी सूर्य को लम्बे समय तक देखने के लिए मेरे शरीर के लिए श्रेष्ठ ओषध का पूर्ण करते हैं। पर्यावरण के इस महत्वपूर्ण घटक की स्थिति अब बहुत नाजुक हो गई है। नदी के तट पर बसे महानगरों और शहरों का सम्पूर्ण मल-मूत्र नदी में डाला जा रहा है। कारखानों का विषैला तेजाब युक्त तरल पदार्थ भी नदी में प्रवाहित किया जा रहा है। मृत मानव और पशुओं के शरीर भी नदी में प्रवाहित कर दिये जाते हैं। इससे पानी पीने योग्य नहीं रह जाता है।

जल प्रदूषण को बचाने के लिए शहर का मल-मूत्र और विषैला तरल पदार्थ नदी में नहीं डालकर उसके लिए एक तालाब बना कर उसमें डाला जावे। तरल पदार्थ को संयन्त्रों द्वारा शुद्ध कर नदी में डाला जावे तथा ठोस मल पदार्थ को खाद बनाकर कृषि कर्म में उपयोग किया जावे। जलाशय में नहाते समय कुल्ला व नाक बाहर साफ करें। कपड़े भी पानी लेकर अलग से धोवें और गंदा पानी जलाशय में न जाने दें। कुएं में समय-समय पर लाल दवा डालने रहे और पानी भी निकालते रहे। शुद्ध जल के उपयोग से हम निरोग रहेंगे और शरीर सुन्दर बनेगा।

आपो अस्माकं मातरः शुद्धयन्तु घृतेन नो घृतत्वः पुनन्तु।
विश्रव ँहि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरूदिदाभ्यः शुचिरा पूतऽएमि।
दीक्षा तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा शग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्।। यजु. 4.2.

भावार्थ-मनुष्य को योग्य है कि जो सब सुखों को प्राप्त कराने, प्राणों को धारण कराने तथा माता के समान पालन का हेतु जल है उनसे सब प्रकार पवित्र होकर इनको शोध कर मनुष्यों को नित्य सेवन करना चाहिए, जिससे सुन्दर वर्ण, रोग रहित शरीर को सम्पादन कर निरन्तर प्रयत्न के साथ धर्म का अनुष्ठान कर आनन्द भोगें।

पर्यावरण का चौथा घटक ध्वनि प्रदूषण है। ध्वनि ही हमारे ज्ञानार्जन का साधन तथा विचारों का आदान प्रदान करने वाला है। सभी प्राणियों की ध्वनि में भिन्नता होने से गहन अन्धकार में भी हम पहचाने जाते हैं कि कौन प्राणी बोल रहा है। विभिन्न वाद्य यन्त्रों को भी ध्वनि से ही जान लिया जाता है। ध्वनि का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है परन्तु वर्तमान में विभिन्न कारखानों, रेलगाड़ियों, बसों, मोटरों, ट्रकों, लाउड स्वीकरों आदि की लगातार तीव्र ध्वनि हमें बहरा बनाने लगी है। हमारी नींद में बाधा डालने लगी है, सिर दर्द और तनाव हमारे साथी बनते जा रहे हैं। ध्वनि की तीव्रता को डेसिबल में नापा जाता है। 20 डेसिबल से अधिक शोर को ध्वनि प्रदूषण कहा जाता है। शहरों में सदैव 40 डेसिबल से अधिक शोर रहता है। इससे बचने के लिए हमें लाउड स्पीकर का कम से कम उपयोग करना चाहिए। रेडियो और टी. वी. की ध्वनि भी उतनी ही रखना चाहिए जिसने से हम सुन सकें। सदैव धीमा बोलना चाहिए। बोलना मधुर और शान्त रहे। तेज ध्वनि का उपयोग तो शत्रु को भगाने के लिए युद्ध में नगाड़ों द्वारा करें। ऋ. 10.102 मंत्र संख्या 5 से 10 में ऐसे कृत्रिम सांड का वर्णन है जो अपनी तेज आवाज़ और विषैली गैस से शत्रु को युद्ध के मैदान से भगा देता है।

पर्यावरण का पांचवां घटक है खाद्य प्रदूषण। खाद्य पदार्थों के अभाव में जीवन ही संभव नहीं है। आज़ कल खाद्य पदार्थों में भी मिलावट की जा रही है। जबकि भोजन द्वारा शरीर को कार्य करने के लिए ऊर्जा प्राप्त होती है। कार्य करने से कोशिकाओं में जो टूट-फूट होती है उसकी मुरम्मत होती है और नई कोशिकाओं का निर्माण भी होता है। भोजन द्वारा शरीर को ताप मिलता है और ताप पर नियंत्रण भी होता है। भोजन द्वारा ही शरीर का विकास भी होता है। अथर्ववेद काण्ड 6 सूक्त 135 तथा ऋग्वेद मण्डल 8 सूक्त 48 के मंत्रों में भोजन की उपयोगिता के विषय में पर्याप्त वर्णन है।

यत् पिबामि सं पिबामि समुद्र इव संपिबः।
प्राणानमुष्य संपाय सं पिबामो अमुं वयम्।। अथर्व. 6.135.2.

मैं जो कुछ पीता हूँ यथा विधि पीता हूँ। जैसे यथाविधि पीने वाला समुद्र पीकर पचा लेता है। पदार्थ को यथाविधि हम पीवें।

इसी प्रकार अगले मंत्र में खाने के विषय में कहा गया है।

स्वादोरभक्षि वयसः सुमेधाः स्वाध्यो वरिवो वित्तरस्य।
विश्वे यं देवा उत मर्त्यासो मधु ब्रुवन्तो अभि सञ्चरन्ति।। ऋ. 8.48.1.

मैं अन्न खाऊँ। अन्न कैसा हो? जो स्वादु हो जो सत्कार के योग्य हो जिसको देख कर ही चित्त प्रसन्न हो। जिस अन्न को साधारण तथा श्रेष्ठ व्यक्ति मधुर कहते हुए खाते हैं। हम उस अन्न को खायें। खाने वाले सुमति और बुद्धिमान हों साथ ही उद्योगी और कर्म परायण हों। वेद में खाद्यान्न में मिलावट करने वाले को दण्ड देने का प्रावधान है।

आमे सुपक्वे शवले विपक्वे यो मा पिशाचो अशने ददम्भ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वियातयन्तामगदो३यमस्तु।। अथर्व. 5.29.6.

जिस पिशाच समूह ने कच्चे-अच्छे पक्के विधि प्रकार पके हुए भोजन में मुझे धोखा दिया है। वे पिशाच अपने परिवार सहित विविध प्रकार पीड़ा पावें और यह पुरूष नीरोग रहे। पर्यावरण का छटा घटक मृदा अपमर्दन और वनस्पति क्षरण है।

प्राणी मात्र के लिए मिट्टी और वनस्पति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बड़े-बड़े राजमहल और सामान्य झोपड़ी भी इसी मिट्टी की माया है। विभिन्न पेड़, पौधे, शाक, झाड़ियां आदि इस मिट्टी से ही उत्पन्न होते हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या और मनुष्य की महत्वाकांक्षा ने इस मिट्टी को प्रदूषित कर दिया है। विभिन्न रासायनिक खाद और फसलों के कीड़ों को मारने के लिए जो दवाईयों का छिड़काव किया जा रहा है उसने मिट्टी को विषैला बना दिया है। यह विषैली मिट्टी वर्षा के जल के साथ मिलकर जल को भी विषैला बना रही है। भवन निर्माण हेतु पत्थर पाने के लिए भूमि को बुरी तरह खोदा जा रहा है। पत्थर की खानों के पास मिट्टी और टूटे-फूटे पत्थरों के पहाड़ खड़े हो गए है। अधिक खुदाई के कारण भूकम्प आने लगे हैं।

वेद में पृथ्वी को माता माना गया है। अथर्ववेद काण्ड 12 सूक्त 1 में 64 मंत्र हैं जिनमें पृथ्वी का हृदय ग्राहि वर्णन हुआ है। बारहवें मंत्र में कहा गया है 'माता भूमि पुत्रों अहं पृथिव्या' इसी प्रकार 63वें मंत्र में कहा गया है 'भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।' पृथ्वी को खोदे परन्तु उसे नष्ट न कर दें। ओषधि भी ऐसे खोदे की उसकी जड़ नष्ट न होवे।

यत् ते भूमेविखनामि क्षिप्रम तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्। अथर्व. 12.1.35.

पर्यावरण का अगला घटक पशु-पक्षी है। वेद में इनके संरक्षण को भी बड़ा महत्व दिया गया है। यजुर्वेद का 24वां अध्याय तो इन्हें ही समर्पित है। परन्तु मनुष्यों ने उनको मार कर खाना शुरू कर रखा है। कई पक्षियों का तो नाम भी नहीं बचा है। इसका भी पर्यावरण पर गहरा प्रभाव पड़ा रहा है। इतिशम्।

नये सत्र का शुभारम्भ

दयानन्द पब्लिक स्कूल में नए सत्र 2017 का शुभारम्भ आशीर्वाद दिवस के रूप में किया गया। इस अवसर पर पं० योगराज शास्त्री जी ने वैदिक मंत्रोच्चारण से हवन यज्ञ करवाया। इसमें स्कूल के सभी छात्रों एवं अभिभावकों ने सामूहिक रूप से भाग लिया। स्कूल प्रबंधकीय कमेटी के मैनेजर मनीश मदान, प्रधान संत कुमार जी तथा उपप्रधान गोपाल कृष्ण अग्रवाल जी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्होंने सभी के लिए मंगल कामना करते हुए कहा कि स्कूल में समय-समय पर ऐसे धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन बच्चों को वैदिक धर्म एवं संस्कृति से जोड़ना है। स्कूल के प्रिंसीपल मैडम ने बच्चों को अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को अपनाने और हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रिंसीपल मैडम ने उपस्थित सभी अभिभावकों एवं प्रबंधकीय कमेटी के सदस्यों का धन्यवाद करते हुए कहा कि स्कूल में आगे भी ऐसे अनुष्ठान होते रहेंगे।

-प्रिं० दयानन्द पब्लिक स्कूल, लुधियाना

धैर्य

ले. नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

धैर्य धर्म का लक्षण और मनुष्य के जीवन का अत्यंत आवश्यक गुण है जिसके बिना सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। धैर्य सबसे बड़ी प्रार्थना है जिसके द्वारा जीवन के लक्ष्य का द्वार खुल जाता है। धैर्य ही लक्ष्य के द्वार की चाबी है। वेद भगवान ने भी अधीरता और क्रोध को त्याग कर धैर्यवान सहनशील बनने का आदेश देते हुए कहा **अहमस्मि महमानः।** अथर्व 12/!/54 अरे मैं तो अत्यंत धैर्यवान सहनशील हूं। अत्यंत विपरीत या विषम परिस्थिति में भी सामंजस्य बैठाकर समभाव बनाकर मुस्कराते रहना ही धैर्यवान होना कहलाता है।

योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फंसे अर्जुन का गीता का ज्ञान देते समय भी योगियों के लिए स्थितप्रज्ञ होकर धैर्यवान होना एक आवश्यक लक्षण बताया है। जो सुख में इतराय नहीं विपत्ति में घबराय नहीं और प्रत्येक अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थिति में समभाव ना रह कर उस स्थिति का सामना करे वही धैर्यवान जीवन में सफलता पा सकता है। जो व्यक्ति सुख से समय उसके अभिमान में इतना गया उसका सुख क्षणिक होता है और यदि विपत्ति के समय घबरा गया तो वह मुसीबत पहाड़ बन जाती है और व्यक्ति उस कष्ट में टूट जाता है। इसीलिए महाराज मनु ने धर्म के लक्षण लिखते समय धैर्य को धर्म का लक्षण बताया और वेद भगवान ने भी धैर्यवान सहनशील होने का आदेश दिया।

गुरु वसिष्ठ ने धैर्य का सुंदर उदाहरण देते हुए कहा ''राज्याभिषेक के लिए बुलाये गए और वन के लिए विदा किए गए मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम के मुख के आकार में कोई अंतर नहीं देखा'' इसे कहते हैं धैर्य। योगेश्वर कृष्ण पर कैसे कैसे संकट आए कंस के अत्याचार, जरासन्ध के प्रहार, शिशुपाल के दुर्वचन परन्तु वह सच्चे योगी की भांति सदैव शान्त भाव से मुस्कराते रहे। आधुनिक काल में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द पर ईंट पत्थर फैंके गए, अनेकों बार विष दिया गया, लांछन लगाए गए परन्तु वह सब सहते हुए अत्यंत धैर्य के साथ मानव मात्र के कल्याण में लगे रहे। शायद यही धैर्य ही इन सभी में वह समान गुण था जिसके कारण वह अपने जीवन में अपने लक्ष्य को पाने में सफल रहे और अपने कार्यों विचारों से अमर होकर हम सभी के लिए अनुकरणीय आदर्श स्थापित कर गए।

धैर्यवान सहनशील व्यक्ति के लिए जीवन में कुछ भी असंभव नहीं ऐसा कहते हुए नीति शास्त्र में सुंदर वर्णन किया है ''जिसके हृदय में जल के समान शीतल समुद्र छोटी सी नदी सा मेरू पर्वत पत्थर के खंड समान, सिंह हिरण के समान, सर्प पुष्पों का हार और विष अमृत के समान हो जाता है। शांत रहने और धैर्य रखने से व्यक्ति हर कठिनाई पर विजय पा सकता है इसीलिए कहा गया अच्छे श्रोता बनो धैर्य से सुनो लेकिन करो वही जो तुम्हारा विवेक कहता है। धैर्य सब प्रसन्नताओं व शक्तियों का मूल तत्व है जिसके पास धैर्य संयम सहनशीलता है वह जो इच्छा करे प्राप्त कर सकता है। धैर्य को कमजोरी या मजबूरी समझने वाले मूर्ख होते हैं सहनशीलता तो वीरता का गुण है। अधीर जल्दबाज मनुष्य मुंह के बल गिर पड़ते हैं जबकि धैर्यवान सदा लक्ष्य को सफलता पूर्वक प्राप्त करते हैं। धैर्य संयम का रास्ता दर्द से भरा होता है परन्तु उसकी मंजिल सदैव सुखदायी होती है। धैर्य और संतुष्टि जीवन नौका की वह पतवारें हैं जो उसे भव सागर के दुष्कर भंवर से निकाल कर मंजिल तक ले जाती हैं। विचारों के कारण उपस्थित होने पर भी जिसके मन में विकार उत्पन्न नहीं होते वह धैर्यवान है। धैर्य और मेहनत से वह कुछ पाया जा सकता है जो शक्ति और शीघ्रता से नहीं मिल सकता। इसीलिए हम मनुष्यों को धर्म के लक्षण, वेद के आदेश और मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम योगेश्वर कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर धैर्य संयम सहनशीलता को अपने जीवन में धारण करके अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए।

आर्य समाज लाडवा का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज लाडवा विगत करब 70 वर्षों से गतिमान है। यह आर्य समाज प्रतिवर्ष दो कार्यक्रम करती है। इस बार नवसम्वतसर व आर्य समाज स्थापना दिवस के उत्सव को छह दिवसीय वेद प्रचार की दृष्टि से मनाया गया जिसमें मुख्य वक्ता व यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में होशंगाबाद के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी व भजनोपदेशक पानीपत के तेजवीर जी आमंत्रित किये गये। आचार्य जी प्रातः 7.30 बजे से 10 बजे तक सत्र में ईश्वर व यज्ञ के बारे में उपदेश देते थे और रात्रि के 8 बजे से 10 बजे तक के सत्र में वेद मंत्रों को केन्द्र बना कर व्याख्यान देते थे जिससे राष्ट्र व परिवार की समग्र उन्नति के विभिन्न सूत्र को दिव्य मोतियों के रूप में जनता जनार्दन को प्राप्त होते रहे।

शनिवार को प्रातः 10 बजे से 1.00 बे तक आचार्य जी व तेजवीर जी का भजन व उपदेश का कार्यक्रम स्कूल के सैंट्रल हाल मे रखा गया जिसमें प्राचार्य श्रीमती मीनाक्षी छाबडा जी सहित समस्त स्टाफ की शिक्षिकाएं व अन्य कर्मचारियों ने दत्तचित होकर सुना और बाद में शंकाओं का समाधान किया। तेजवीर जी ने यहां नारियों के जागरण व कर्त्तव्य विषय पर उपदेश दिया तो पुरुषार्थी जी ने वेदों के आधार पर शिक्षा का उद्देश्य विषय पर अपनी बातें रखीं।

इस उत्सव का स्वरूप और भी बृहत हो गया जब आचार्य जी ने 2 अप्रैल रविवार को आर्य समाज से सम्बन्धित सभी सदस्यों को अपने जोडों सहित आने का आह्वान किया जिससे पूरा कार्यक्रम बड़े हाल से आर्य समाज मदिर के खुले मैदान में तबदील करना पडा और 21 यज्ञ वेदियों पर 113 यजमान दम्पत्ति उपस्थित हुये। आचार्य जी ने सभी से विशेष वेद मंत्रों से आहुतियां दिलवाई और सभी को स्थाई रूप से आर्य समाज मंदिर को अपनी संस्था मान कर जुड़ने का आग्रह किया और अपने घर में स्वाध्याय व यज्ञ संध्या नियमित करने का व्रत प्रेरित किया। प्रतिदिन मंच संचालन आर्य समाज के पुरोहित श्री राम जी शास्त्री ने किया। सारा कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा।

-ज्ञानेन्द्र टंडन, मंत्री आर्य समाज लाडवा

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा) में प्रवेश प्रारम्भ

योगिराज भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली एवं युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षास्थली पवित्र ब्रज भूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्रभक्त महाराजा श्री महेन्द्र प्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी जी की तपस्थली गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा 6 एवं 7 में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम 4 अध्याय कण्ठस्थ होगी; वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा 8 में भी प्रवेश पा सकता है।

गुरुकुल में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी विषयों का गहनता से अध्ययन कराया जाता है। अतः विद्यार्थी का मेधावी होना आवश्यक है, इसलिए अभिभावक मेधावी, सुशील विद्यार्थी को ही प्रवेशार्थ लायें।

गुरुकुलीय परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है, इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम है, आर्यजन इसका लाभ उठाकर अपनी संतानों को शिक्षित, सक्षम, संस्कारवान एवं चरित्रवान् राष्ट्रभक्त तथा ऋषिभक्त बनाकर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

आचार्य स्वदेश
कुलाधिपति
(चलभाषः 9456811519)

आचार्य हरिप्रकाश
प्राचार्य
(9457333425, 98376-43458)

वेदवाणी

कहाँ जाएँ

वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्॥
-ऋ. १०।७३।११; साम० पू० ४।४।१।३।७
ऋषिः-गौरिवीतिः॥ देवता-इन्द्रः॥ छन्दः-निचृत्त्रिष्टुप्॥

विनय-हमारे शरीर में पाँच इन्द्रियाँ रहती हैं। ये पक्षियों की तरह बाहर उड़ती-फिरती हैं। ये ऋषि-इन्द्रियाँ हैं, ज्ञान लाने वाली ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। इन्हें अपने रूप-रसादि विषयों से संगमन करना बड़ा प्रिय है। इनका उड़ना (पतन करना) बड़ा सुन्दर है। बाहर से बड़े सुन्दर-सुन्दर रूपों को, रसों को, गन्धों को ये कैसी विलक्षणता से ले-आती है ? इनमें क्या ही अद्भुत गुण है? आँख खोलो, तो सब विविध जगत् दीखने लगता है, आँख बन्द करने पर कुछ नहीं। आँख में क्या विलक्षण शक्ति है ? इसी प्रकार कान को देखो, जीभ को देखो, इनमें क्या विचित्र जादू है कि वे हमारे लिए बड़ी ही आनन्ददायक अनुभूतियों को उत्पन्न करती हैं।

परन्तु एक समय आता है जब ये इतनी अद्भुत इन्द्रियाँ हमारी ज्ञानपिपासा को तृप्त नहीं कर सकतीं। ये बाहर से जो प्रकाश लाती हैं वह सब तुच्छ लगने लगता है। यह तब होता है जब छठी इन्द्रिय (मन) द्वारा अन्दर के प्रकाश की ओर हमारा ध्यान जाता है, प्रत्याहार शुरू होता है और इन्द्रियों का उड़ना बन्द हो जाता है। सब इन्द्रियाँ मन के प्रकाश के मुकाबले में बैठकर अपने अन्धकार को और अपनी परिमितता के बन्धन को अनुभव करती हैं। ओह ! इन्द्रियाँ कितना थोड़ा ज्ञान दे सकती हैं और वह ज्ञान भी कितना बँधा हुआ है ? अन्दर-बाहर की थोड़ी-सी बाधा से उनका ज्ञान-ग्रहण रुक जाता है। आँख अतिदूर, अतिसमीप नहीं देख सकती, अतिसूक्ष्म को नहीं देख सकती, ओट में पार नहीं देख सकती। यह अँधेरा और यह बन्धन तब अनुभव होता है जब मनुष्य को अन्दर के महान्, सब-कुछ जान सकने वाले प्रकाश का पता लगता है। यह इन्द्र का, आत्मा का प्रकाश है। इस प्रकाश-पिपासा से व्याकुल होकर इन्द्रियाँ आत्मा से उस प्रकाश को पाने के लिए गिड़गिड़ाने लगती हैं, प्रार्थना करने लगती हैं कि "हमारे अन्धकार का पर्दा उठा दो, हमारी आँखें प्रकाश से भर दो, हम अन्धे हैं, हमें आँखें दे दो, हम अपने-अपने तनिक-से क्षेत्र में बँधी पड़ी हैं, हमें देशकालाव्यवहित दर्शन की शक्ति दे दो, हमारे बन्धन काट दो, हम जिस देश और जिस काल में जिस वस्तु को देखना चाहें तुम्हारे इस प्रकाश में (प्रज्ञालोक में) देख सकें।"

इन्द्रियाँ अपने शक्ति-स्त्रोत इन्द्र की शरण में न जाएँ तो और कहाँ जाएँ ?

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा। **-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा**

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।